कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुन्दरबाई की सिखापन।
हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर बृज और रास का वर्णन कराया है और उसका सिखापन (शिक्षा) देकर हमारे सभी काम इस तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला और अभिमान करने पर दुःख मिलता है—अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)।

सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन।
ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिऐं कियो उपदेस।। १९ ।।

इसलिए, सुन्दरसाथजी! सुनो, यह कारण था कि धनी धाम से अत्यन्त आनन्द लेकर आए। तुम्हारे अन्दर माया तिल भर भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने यह उपदेश किया है, सिखापन दी है।

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ।
भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन।। २० ।।

जिस तरह से तुमने पहले बृज से रास में जाते समय माया छोड़ी थी, उसी रास्ते अब भी चलो। मौका हाथ से न जाने दो। पहले भी धनी ने यही वचन कहे हैं कि सुन्दरसाथ की सेवा बड़े प्रेम से करो।

अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर।
कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए।। २१ ।।

अब हे साथजी! तारतम ज्ञान की जागृत बुद्धि से कहती हूं, जिसको अपने चित्त में रखना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब इस तारतम ज्ञान के जाहिर होने से तुम्हारा कोई संशय बाकी नहीं रह जाएगा।

बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई।
अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ काढों निरधार।। २२ ।।

बृज और रास की लीला की पहचान तारतम ज्ञान से करा दी। अब इस जागनी ब्रह्माण्ड की हकीकत कहती हूं। जिससे सब साथ को निश्चित ही ढूंढ़ निकालूंगी।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ५१ ।।

श्री सुन्दरबाई के अंतरध्यान की बीतक

नोट—श्री श्यामा महारानीजी का ही नाम इस खेल में राजजी ने सुन्दरबाई रखा—"धरयो नाम बाई सुन्दर, निजवतन दिखाया घर।"

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।। १ ।।

श्री सुन्दरबाई श्यामाजी की अवतार हैं, (जिनकी लीला श्री देवचन्द्रजी के तन से हुई)। जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना पूर्ण आवेश दिया। यह ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार (प्रधान) हैं तथा धाम धनी की अंगना नार हैं।

Nijanand App

कई खेल किए ब्रह्मसृष्ट कारन, धनी दया पूरन अति घन।
अनेक वचन सैयन को कहे, पर नींद आड़े कछू हिरदे ना रहे।। २ ।।

इन्होंने ब्रह्मसृष्टियों के लिए कई आड़िका (चमत्कारिक) लीलाएं भी कीं। इनके ऊपर श्री राजजी महाराज की पूर्ण कृपा है, जिससे उन्होंने ब्रह्मसृष्टियों को तरह-तरह का ज्ञान समझाया, परन्तु अज्ञानता होने के कारण किसी के हृदय में वह वचन नहीं रहे।

तब भी अनेक विध कही, पर नींद पेड़ की आड़ी भई।
भी फेर अनेक दिए द्रष्टांत, पर साथ पकड़ के बैठा स्वांत।। ३ ।।

फिर भी उन्होंने अनेक तरह से कहा, परन्तु माया के परदे के होने से साथ को समझ में नहीं आया। फिर अनेक दृष्टान्त भी दिए, परन्तु सुन्दरसाथ मौन होकर बैठ गए।

तब अनेक धनिऐं किए उपाए, पर सुभाव हमारा क्योंए न जाए।
तब अनेक विध कह्या तारतम, पर तो भी अपना न गया भरम।। ४ ।।

तब धनी ने अनेक प्रयत्न किए, परन्तु हमारा स्वभाव (माया की चाह) नहीं बदला। तब अनेक तरह से तारतम ज्ञान की बातें कहीं फिर भी साथ के संशय नहीं मिटे।

तब अनेक आपन को कहे विचार, कई विध कृपा करी आधार।
तब अनेक पखें समझाए सही, तो भी कछू टांकी लागी नहीं।। ५ ।।

फिर साथ को अनेक तरह के विचारों से समझाया और कई प्रकार की कृपाकर तरह-तरह से समझाया, परन्तु वचनों की चोट नहीं लगी।

तब विध विध कह्या अनेक प्रकार, तो भी भई सुध न सार।
अनेक सनंधें केहे केहे रहे, पख पचीस आपन को कहे।। ६ ।।

तब और भी कई तरीकों से कहते रहे तो भी सुन्दरसाथ को कोई खबर नहीं पड़ी। अनेक तरह से पच्चीस पक्षों की भी बातें कीं तो भी सुन्दरसाथ को होश नहीं आया।

सो भी सेहे कर रहे आपन, नींद ना गई मांहें जागे सुपन।
तो भी धनी की बोहोतक दया, अखंड बृज का सुख सब कह्या।। ७ ।।

हम सुन्दरसाथ पच्चीस पक्षों के ज्ञान को भी अनसुना कर गए। सपने में जागे तो, पर नींद की खुमारी नहीं गई। फिर भी धनी की बहुत दया है कि जो उन्होंने अखण्ड बृज के सुखों का वर्णन किया।

भी वरन्यो सुख नेहेचल रास, पहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।
रास अखंड रात रोसन, बृज लीला अखंड रात दिन।। ८ ।।

इसके बाद अखण्ड रास का वर्णन किया और बृज और रास के ज्ञान की बातें बताईं। रास की रात्रि की लीला अखण्ड है और बृज की लीला दिन और रात की अखण्ड है।

दोऊ जुदी लीला कही अखंड, तीसरी अखंड लीला ए ब्रह्मांड।
किए तारतमें मन वांछित काम, भी देखाया सुख अखंड धाम।। ९ ।।

बृज की और रास की दोनों लीलाएं अलग-अलग अखण्ड हैं। तीसरी इस ब्रह्माण्ड की लीला अखण्ड होनी है। सुन्दरसाथ की मन की चाही इच्छा पूरी की तथा परमधाम के अखण्ड सुख भी दिखाए।

Nijanand App

दया धनी की है अति घन, कई विध सुख लिए सैयन।
सेवा करी धनबाईऐं पेहेचान के धनी, सोभा साथ में लई अति घनी।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की दया बहुत ज्यादा (घनी) है, जिसका सुन्दरसाथ ने बहुत सुख लिया, परन्तु धनबाई की आत्मा (गांगजी भाई) ने धाम का धनी पहचानकर सेवा की। सुन्दरसाथ में उनकी बड़ी शोभा हुई।

साथ सों हेत कियो अपार, धंन धंन धनबाई को अवतार।
कछुक लेहेर लागी संसार, ना दई गिरने खड़ी राखी आधार।। ११ ।।

सुन्दरसाथ की गांगजी भाई ने बड़े प्यार से सेवा की, इसलिए धन्य-धन्य हो गए। उन्हें संसार की लहर ने गिराना चाहा। धनी ने मेहर (कृपा) कर उनको गिरने नहीं दिया और ईमान को पक्का रखा।

बेहेवट पूर सह्यो न जाए, कर पकर के दई पोहोंचाए।
तो भी सुध न भई आपन, क्योंए न छूटे मोह जल गुन।। १२ ।।

माया का विकट प्रवाह आया था जो सहन नहीं किया जाने वाला था (भानबाई का त्याग), फिर भी धनी ने हाथ पकड़कर माया से बचा लिया। यह सब देखकर भी हम सुन्दरसाथ को चेतना नहीं आई। इस भवसागर के बन्धन नहीं छूटे।

तब लरे हमसों अपनायत करी, तो भी नींद हम ना परहरी।
कई विध कह्या आप आंझू आन, पर या समें हमको सुध न सान।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि तब धनी देवचन्द्रजी ने मुझे अपनेपन से डांटा (मेहराज ठाकुर ने अपने हठ से परमधाम देखने के लिए इतनी कसनी कर डाली कि मरने तक की नौबत आ गई, तब डांटा और पूछा कि मेरे स्वरूप को तुमने क्या पहचाना? जो तुम मेरे कहने पर विश्वास नहीं करते। मेहराज ठाकुर कहते हैं आपको परमधाम नजर आता है, मुझको क्यों नहीं आता? तब देवचन्द्रजी ने कहा, मुझे उठाओ तुम बैठो) तो भी हमने माया नहीं छोड़ी। तब धनी ने रो-रोकर कहा, पर इस पर भी हम सुन्दरसाथ को सुध नहीं आई।

तब फेर धनिऐं कियो विचार, साथ घरों ले जाना निरधार।
तब संवत सत्रे बारोतरा बरख, भादों मास उजाला पख।। १४ ।।

तब धनी देवचन्द्रजी ने विचार किया कि सुन्दरसाथ को घर ले जाना जरूरी है। (पर इन पर बातों का कोई असर नहीं हो रहा है, तो इस तन को बदलना चाहिए) तब सम्वत् सत्रह सौ बारह के वर्ष, भाद्रपद (भादों) के महीना उजाला पक्ष में।

चतुरदसी बुधवारी भई, सनंध सर्वे श्री बिहारीजीसों कही।
मध्यरात पीछे किया परियान, बिहारीजी को सुध भई कछु जान।। १५ ।।

चतुर्दशी (चौदस) बुधवार के दिन बिहारीजी को बुलाकर शरीर छोड़ने की सब बात बताई। तब आधी रात के बाद तन छोड़ दिया, तब बिहारीजी को कुछ होश आया।

इन अवसर मैं भई अजान, मोहे फजीत करी गिनान।
न तो मोहे बुलाए के दई निध, पर या समें न गई मोहजल बुध।। १६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि धाम चलने की खबर मुझको नहीं हुई। मेरी बुद्धि जान न पाई कि आज रात धनी धाम चले जाएंगे, इस कारण मैं शर्मिंदा हुई। मुझे धरौल से बुलाकर बाईस दिन पास रखकर कुल ज्ञान दिया था, किन्तु ठीक समय मेरी माया की बुद्धि काम नहीं आई।

Nijanand App

इन समें हुती माया की लेहेर, तो न आया आतम को वेहेर।
तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ।। १७ ।।

उस समय मेरा ध्यान माया में था, इसलिए मेरी आत्मा को दुःख नहीं हुआ। तब मेरी न्यामत श्री देवचन्द्रजी मुझे छोड़ गए और धाम पधार गए। (इन्द्रावती का दिल ही धाम है)।

तब हमसों इसारत करी, कह्या धाम आड़े इंद्रावती खड़ी।
मैं पैठ न सकों वह करे विलाप, तब मोहे बुलाए के कियो मिलाप।। १८ ।।

धनी ने यह बात इशारे से बताई थी कि धाम के दरवाजे में श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा खड़ी रो रही है, इसलिए मैं धाम के अन्दर नहीं जा सकता। (क्योंकि नौ वर्ष का वियोग था) तब मुझे बुलाकर मिले।

ए केहके साथ को सुनाई, ए इसारत तब हम न पाई।
आप भी इत विरह कियो, पर मैं हिरदे में कछू न लियो।। १९ ।।

इस इशारे को उस समय सुन्दरसाथ समझ नहीं पाया। खुद देवचन्द्रजी ने रोकर कहा, पर मेरे हृदय में कुछ नहीं आया।

तब अद्रष्ट भए हममें से इत, हम सारे साजे बैठे तित।
जो कछू जीव को उपजे भाउ, तो क्यों छोड़े हम पिउ के पाउं।। २० ।।

तब हमारे बीच में से अदृश्य हो गए और हम सब बैठे देखते रहे। हमारे जीव को यदि कुछ सुध होती तो हम उनके चरण नहीं छोड़ते (अकेले न जाने देते, साथ में तन छोड़ते)।

सो तो सब मैं देख्या द्रष्ट, पर बैठा जीव होए कोई दुष्ट।
न तो क्यों सहिए धनी को बिछोह, जो जीव कछू जाग्रत होए।। २१ ।।

वह सब नजारा मैंने आंखों से देखा। यह दुष्ट जीव बैठा ही रहा नहीं तो जीव को थोड़ी भी सुध होती तो धनी का वियोग सहन नहीं करता।

एक वचन का न किया विचार, न कछू पेहेचान भई आधार।
सुनो हो रतनबाई ए कैसा फेर, कौन बुध ऐसी हिरदे अंधेर।। २२ ।।

उनके कहे एक वचन का भी विचार नहीं किया और न पहचान हुई कि इनके अन्दर प्रीतम हैं। रतनबाई (बिहारीजी) को श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे रतनबाई! उस समय मेरी मति क्यों मारी गई? मैं बेसुध क्यों हो गई?

ए बेसुधी कैसी आई, कछू पाई न सुध मूल सगाई।
देखो रे सई ऐसी क्यों भई, ए सुख छोड़ मैं अकेली रही।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मुझ में ऐसी बेहोशी कैसे आई कि मैं मूल सम्बन्ध को नहीं पहचान सकी। हे मेरी सखी! देखो तो सही ऐसे सुख को छोड़कर मैं अकेली रह गई।

ए दुख की बातें हैं जो घनी, पर रह्यो जीव कछू अग्या धनी।
इन समें जो निध न जाए, तो क्यों आवेस सरूप सहे अंतराए।। २४ ।।

यह दुःख की बातें बहुत हैं, पर यह जीव धनी के हुकम से ही रह गया। यदि उस समय जब मैं घर गई थी तब धनी धाम न जाते, अर्थात् मेरे सामने जाते तो मैं धाम-धनी का जुदा होना सहन न कर पाती (मैं अपना शरीर छोड़ देती)।

Nijanand App

फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें क्यों ना करी अखंड घर सुध।
महादुष्ट तूं अभागनी, ना सुध दई जीव को जाते धनी।। २५ ।।

हे मेरी बुद्धि ! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे अखण्ड घर की सुध क्यों नहीं दी? तू महादुष्टा अभागिनी है। धनी के 'धाम' जाते समय तूने मेरे जीव को खबर नहीं दी।

ए बातें तें क्योंकर सही, के या समें घर छोड़ के गई।
के तूं विकल भई पापनी, बिना खबर निध गई आपनी।। २६ ।।

हे मेरी बुद्धि ! इस बात को तूने कैसे सहन कर लिया? क्या तू उस समय घर छोड़कर कहीं गई थी? (घास चरने गई थी) हे पापिनी! क्या तू विचलित हो गई थी? तुझे होश भी नहीं आया और धनी चले गए।

होए आवेस सरूप पेहेचान, पेहेचान पीछे न सहिए हान।
तिन कारन जो यों न होए, तो प्रगट लीला क्यों करे कोए।। २७ ।।

जब श्री राजजी महाराज के आवेश के स्वरूप की पहचान हो जाए तो पीछे वियोग सहन नहीं होता। यदि ऐसा न होता तो लीला प्रगट कैसे होती?

अब तोको कहा देऊं रे गाल, तूं भूली अवसर अपनो इन हाल।
फिट फिट रे भूंडें तूं मन, तें अधरम कियो अति घन।। २८ ।।

हे बुद्धि ! तुझे अब क्या गाली दूं? तू ऐसी हालत में अपना मौका खो बैठी। हे पापी मन ! तुझे धिक्कार है। तूने बहुत ही अधर्म किया है।

जीव बराबर बैठा होए, क्यों बैठा तूं ए निध खोए।
एती बड़ाई तुझ पर भई, तुझ देखते ए निध गई।। २९ ।।

तू तो शरीर में जीव के बराबर अधिकार लेकर बैठा है। फिर तूने यह न्यामत कैसे खो दी? तुझे इतनी शोभा मिली थी, फिर भी तेरे देखते हुए धनी चले गए।

तें ना दई जीव को खबर, नेठ झूठा सो झूठा आखिर।
ए क्रोध है बड़ा समरथ, पर आया न मेरे समें अरथ।। ३० ।।

तूने जीव को खबर नहीं दी, आखिर झूठे का झूठा ही रहा। हे क्रोध ! तू बड़ा समर्थ है, परन्तु मेरे काम नहीं आया।

गुन अंग इंद्री सबे घारन, कोई न जाग्या जीव के कारन।
इन सूरमों किनहूं न खोल्या द्वार, जीव बैठा पकड़ आकार।। ३१ ।।

हे मेरे गुण, अंग, इन्द्रियो ! तुम सब सो गए और तुम जीव के लिए जागृत नहीं हुए। इन सूरमाओं (शूरवीरों) में से किसी ने दरवाजा नहीं खोला अर्थात् जीव को सूचना नहीं दी, इसलिए जीव शरीर को पकड़कर बैठा रहा।

धिक धिक रे भूंडा जीव अजान, तेरी सगाई हुती निरवान।
रे मूरख तोको कहा भयो, धनी जाते कछू पीछे ना रह्यो।। ३२ ।।

धिक्कार है, हे पापी जीव ! तुझको जो अनजाना बन रहा है, तेरा तो निश्चित ही धनी से सम्बन्ध था (पहचान थी)। मूर्ख! तुझे क्या हो गया कि धनी चले गए। अब बता पीछे तेरा क्या रहा?

Nijanand App

एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिऐं कही।
निपट जीव तूं हुआ निठोर, झूठी प्रीत न सक्या तोर।। ३३ ।।

हे जीव ! तू इतना जुल्म कैसे सहन कर गया? तुझे तो धनी ने इतना समझाया था। हे जीव ! तू निश्चय ही कठोर हो गया है (काला पत्थर हो गया है)। तू इस तन से झूठी प्रीति नहीं तोड़ सका?

ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचारया न छोड़ी अंधेर।
ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए।। ३४ ।।

तू इस समय ऐसा नासमझ बदनसीब हो गया कि तूने कुछ नहीं सोचा और शरीर में पड़ा रहा (शरीर छोड़ा नहीं)। अपने आप से ऐसा कोई नहीं करता कि दूसरे के वश में होकर अपनी न्यामत खो दे।

ऐसा होए खांगडू जुदा पड़या, एती अगनिऐं अजू न चुड़या।
पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल।। ३५ ।।

तू ऐसा खागडू (न गलने वाली मूंग का दाना) निकला कि इतना कहर बरसा फिर भी तू गला नहीं। पांच वर्ष का बालक भी अपने को सम्भाल कर रखता है।

धनिऐं तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या।
तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भूंडा कहां था काल।। ३६ ।।

धनी ने तुझे बहुत कुछ कहा, परन्तु अवसर हाथ से निकल गया। अब पछताने से क्या होगा? हे पापी काल ! तू उस समय कहां था? तेरा बन्धन उस समय क्यों नहीं टूटा?

ए तो केहेर बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम।
सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू न रह्या।। ३७ ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ है। न जाने अपने खाविन्द का विरह कैसे सहन हुआ? मैंने यह सब कुछ देखा तो पता चला कि हम बेईमान हो गए।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

विलाप–राग रामश्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे।। १ ।।

मैं ओही-ओही और हाय-हाय करती फिरती हूं, मेरे प्रीतम चले गए। वियोग कैसे सहन करूं? यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे।
वाओ ना लगी तिन दिसकी, निकस ना गए क्यों प्रान रे।। २ ।।

धिक्कार है पापी शब्द तुझे, मुख से तूने यह कैसे कहा कि धनी चले गए? उनके जाने की खबर तुझे नहीं मिली? हे प्राण! तुम निकल क्यों नहीं गए।

Nijanand App